विशद

श्री चन्द्रप्रभु देहरा तिजारा विधान लघु

मध्य में –
प्रथम वलय में – 4 अर्घ्य
द्वितीय वलय में – 8 अर्घ्य
तृतीय वलय में – 16 अर्घ्य
कुल 28 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. क्षमामूर्ति, साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

कृति	:	**विशद श्री चन्द्रप्रभु देहरा तिजारा विधान (लघु)**
कृतिकार	:	प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर महाराज
संकलन	:	मुनि श्री विशालसागर जी, आर्यिका भक्ति भारती माताजी
सहयोगी	:	ऐलक विदक्षसागर जी, क्षुल्लक विसोमसागर जी, क्षुल्लिका वात्सल्य भारती
सम्पादन	:	ब्र. ज्योति दीदी, ब्र. आस्था दीदी, ब्र. सपना दीदी 9829127533
संस्करण	:	द्वितीय 2018 प्रतियाँ : 2000/- संयोजन : ब्र. आरती दीदी
प्राप्ति स्थल	:	ज्ञानसागर साहित्य केन्द्र-तिजारा श्री रमेश शास्त्री
मूल्य	:	21/- रु. मात्र
मुद्रक	:	पारस प्रकाशन, दिल्ली. मो: 9818394651, kavijain1982@gmail.com

-: अर्थ सौजन्य :-

ललित कुमार जैन रीतेश जैन	**अरहंत इंटरनेशनल मेन्यूफेक्चर**
दीप्तेश जैन	**एण्ड एक्सपोर्ट**
48, मानस नगर, आगरा	**61-बी, साऊथ गणेश नगर, गली नं. 2, दिल्ली-92**
मो.: 9639015403	**मो.: 9810538690, 9560028175**

जलाभिषेक पाठ

सोरठा- मंगलमूल महान, जय-जय जिन भगवन्त हैं।
करतें हम गुणगान, वीतराग सर्वज्ञ का।।

दोहा- तव गुण वर्णन कर सके, कौन है वह गुणवन्त।
इन्द्र सु गुण तव कह थके, चार ज्ञान धर संत।।

।। गीता- छन्द।।

अनुपम अमित गुणधर अलौकिक, अकथ गुणमणि राश है।
कैसे निहारें आपको, जिन ज्यों अलोकाकाश है।।
तव नाम में वह शक्ति है, जिनके हृदय श्रद्धान है।
निज का प्रयोजन सिद्ध हो, करके विशद गुणगान है।।1।।

दोहा- मोहनीय अन्तराय नश, ज्ञान दर्शनावर्ण।
केवलाज्ञानी जिन हुए, इन्द्रादिक नत शर्ण।।

(गीता छन्द)

फिर इन्द्र का आसन कंप्यो, तव अवधि ते जान्यो सही।
तव सात पग आगे चल्यो, जिन पद नमें लग के मही॥
धनपति सहित सुर आन रचते, रत्नमय शुभ समवसृति।
ना लोक में पाई अलौकिक, दिव्य जिन की प्रतिकृति॥2॥

दोहा- त्रय प्रदक्षिणा दे सही, कीन्हा जय-जयकार।
धनपति चरणों वन्द्यकर, हर्षित होय अपार॥

सुर वृक्ष के नीचे सिंहासन, कमल ऊपर-जिन प्रभो!।
सोहें गगन में क्षत्र त्रय, चौंसठ चॅवर ढौरें विभो!॥

भवि दर्श कर जिनके चरण में, वंदते हैं आनकर।
प्रभु वीतरागी की करें, अर्चा विशद श्रद्धान कर॥3॥

दोहा-अष्टादश जिनके नहीं, क्षुधा तृषादिक दोष।
परमौदारिक देह युत, पावन हैं निर्दोष॥

श्रम बिना ही श्रम रहित जल बिन, अमल ज्योति स्वरूप हैं।
हो कृपावंत शरणा-गतिन को, श्रेष्ठ विमल अनूप हैं॥
है शांत मुद्रा जिन प्रभू की, नीर से करते न्हवन।
अति भक्ति वश त्रय योग से, वन्दन करें जिनके चरण॥4॥

दोहा- हम मलिन रागादि से, हैं पवित्र जिनराज।
तव मज्जन हम क्या करें, तारण तरण जहाज॥

बीत्यो अनादी काल यह, मेरे अशुचिता हो रही।
प्रभु अशुचिता हर आप हो इक, अतः तव शरणा लही॥
हे नाथ! कर्म विनाश रागादिक कषाएँ सब नशें।
जगवास तज शिवराज पाएँ, मुक्तिपुर में जा बसें॥5॥

दोहा- रागादिक वर्जित हुए, अष्ट कर्म को नाश।
नय प्रमाण तें जानिए, पूरी करते आस॥

तज दोष पापाचरण सारे, चित्त निर्मल कर महा।
जिनबिम्ब का करते न्हवन, साक्षात ज्यों जिन का अहा॥
जिन भक्ति से परिणाम निर्मल , बन्ध शुभ कर हों सही।
नशती अशुभ गति पुण्यदायी, जीव पाए शिव मही॥6॥

दोहा- चक्षू कर पावन भये, दर्श पर्श से नाथ!।
सफल हुए गुणगान से, मन वच काय भी साथ॥

हम शक्ति पूर्वक भक्ति कर, जिनराज की अर्चा करें।
पाके मनुज पर्याय पावन, नीव शिव घर की धरें॥
सुरगुरु गणधर आदि प्रभु की, भक्ति कर-कर के थकें।
हम भक्ति से प्रेरित हुए, गुणगान कैसे कर सकें॥7॥

दोहा- क्षीर सिन्धु का मानकर, स्वर्ण कलश में नीर।
धारा देते शीश पर, हरने भव की पीर॥

हे विघ्न हारक! भव निवारक, मोहतम नाशी प्रभो!।
आनन्द कारक दुख निवारक, मोक्ष के वासी विभो!॥
हे पतित पावन! कर्म क्षारक, कल्पतरु चिन्तामणी।
तव भक्ति करते भाव से हम, हे विशद त्रिभुवन धनी!॥8॥

दोहा- आदि नाम धारी प्रभो!, हरि हर ब्रह्मा बुद्ध।
नित्य निरंजन अमल शुभ, तुम हो परम विशुद्ध॥

सोरठा- भवदधि तारण हार, हुए पार भव सिन्धु से।
कर दो भव से पार, अनुक्रम से प्रभु भक्त को॥

।।इत्याशीर्वाद।।

अर्घ्य

जल गंधाक्षत पुष्पचरु दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके विशद पावन अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं श्री जिनबिम्बाभिषेकं करोमि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वृहत् शांतिधारा पाठ

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते श्रीमत्पार्श्वतीर्थंकराय श्रीमद्-रत्नत्रयरूपाय दिव्यतेजोमूर्त्तये प्रभामण्डलमण्डिताय द्वादशगणसहिताय अनन्तचतुष्टयसहिताय समवसरण केवलज्ञान लक्ष्मीशोभिताय अष्टादश दोषरहिताय षट् चत्वारिंशद् गुणसंयुक्ताय परमेष्ठि पवित्राय सम्यग्ज्ञा- नाय स्वयंभुवे सिद्धाय बुद्धाय परमात्मने परमसुखाय त्रैलौक्यमहिताय अनंत संसार चक्रप्रमर्दनाय अनन्तज्ञान दर्शन वीर्य सुखास्पदाय त्रैलोक्यवशंकराय सत्यज्ञानाय सत्यब्रह्मणे उपसर्गविनाशनाय घातिकर्मक्षयंकराय अजराय अभवाय अस्मांक (अमुक राशिनामधेयानां) व्याधिं घ्नन्तु। श्री जिनाभिषेकपूजन प्रसादात् अस्माकं सेवकानां सर्वदोष रोग शोक भय पीड़ा विनाशनं भवतु।

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष दोष कल्मषाय दिव्य तेजोमूर्तये श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्न प्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्यु विनाशनाय सर्वपरकृत क्षुद्रोपद्रव विनाशनाय सर्वारिष्ट शान्ति कराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रैं ह्रः अ सि आ उ सा

नमः मम सर्वविघ्न शान्तिं कुरु कुरु तुष्टिं पुष्टिं कुरु-कुरु स्वाहा। मम कामं छिन्धि-छिन्धि भिन्धि-भिन्धि। रतिकामं छिन्धि-छिन्धि भिन्धि-भिन्धि। बलिकामं छिन्धि-छिन्धि भिन्धि-भिन्धि। सर्वशत्रु विघ्नं छिन्धि-छिन्धि भिन्धि-भिन्धि। सर्वोपसर्गं छिन्धि-छिन्धि भिन्धि-भिन्धि। सर्वविघ्नं छिन्धि-छिन्धि भिन्धि-भिन्धि। सर्वराज्य भयं छिन्धि-छिन्धि भिन्धि-भिन्धि। सर्वचौर दुष्टभयं छिन्धि-छिन्धि भिन्धि-भिन्धि। सर्व सर्प वृश्चिक सिंहादिभयं छिन्धि-छिन्धि भिन्धि-भिन्धि। सर्वग्रहभयं छिन्धि-छिन्धि भिन्धि-भिन्धि। सर्वदोषं व्याधिं डामरं च छिन्धि-छिन्धि भिन्धि-भिन्धि। सर्वपरमंत्रं छिन्धि-छिन्धि भिन्धि-भिन्धि। सर्वात्मघातं परघातं च छिन्धि-छिन्धि भिन्धि-भिन्धि। सर्वशूलरोगं कुक्षिरोगं अक्षिरोगं शिरोरोगं ज्वररोगं च छिन्धि-छिन्धि भिन्धि-भिन्धि। सर्वनरमारिं छिन्धि-छिन्धि भिन्धि-भिन्धि। सर्वगजाश्व गो महिष अजमारिं छिन्धि-छिन्धि भिन्धि-भिन्धि। सर्वसस्य धान्य वृक्ष लता गुल्म पत्र पुष्प फलमारिं छिन्धि-छिन्धि भिन्धि-भिन्धि। सर्वराष्ट्रमारिं छिन्धि-छिन्धि भिन्धि-भिन्धि। सर्वक्रूर वेताल शाकिनी डाकिनी भयानि छिन्धि-छिन्धि भिन्धि-भिन्धि। सर्ववेदनीयं छिन्धि-छिन्धि भिन्धि-भिन्धि।

सर्वमोहनीयं छिन्धि-छिन्धि भिन्धि-भिन्धि। सर्वापस्मारिं छिन्धि-छिन्धि धिन्धि भिन्धि-भिन्धि। अस्माक्म अशुभकर्म जनित दु:खानि छिन्धि-छिन्धि भिन्धि-भिन्धि। दुष्टजनकृतान् मंत्र तंत्र दृष्टि मुष्टि छल छिद्रदोषान् छिन्धि-छिन्धि भिन्धि-भिन्धि। सर्वदुष्ट देव दानव वीर नर नाहर सिंह योगिनी कृत दोषान् छिन्धि-छिन्धि भिन्धि-भिन्धि। सर्व अष्टकुली नागजनित विषभयानि छिन्धि-छिन्धि भिन्धि-भिन्धि। सर्वस्थावर जंगम वृश्चिक सर्पादिकृत- दोषान् छिन्धि-छिन्धि भिन्धि-भिन्धि। सर्वसिंहाष्टा पदादि कृतदोषान् छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। परशत्रुकृत मारणोच्चाटन विद्वेषण मोहन वशीकरणादिदोषान् छिन्धि-छिन्धि भिन्धि-भिन्धि। ॐ ह्रीं अस्मभ्यं चक्र विक्रम सत्त्व तेजो बल शौर्य शान्ती: पूरय पूरय। सर्वजीवानंदनं जनानंदनं भव्यानंदनं गोकुलानंदनं च कुरु कुरु। सर्वराजानंदनं कुरु कुरु। सर्वग्राम नगर खेडा कर्वट मटंब द्रोणमुख संवाहनानंदनं कुरु-कुरु। सर्वानंदनं कुरु-कुरु स्वाहा। यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधि व्यसन वर्जितम्। अभयं क्षेममारोग्यं स्वस्तिरस्तु विधीयते।। श्रीशान्तिरस्तु। शिवमस्तु। जयोस्तु। नित्यमारोग्यमस्तु। अस्माकं पुष्टिरस्तु। समृद्धिरस्तु।

कल्याणमस्तु। सुखमस्तु। अभिवृद्धिरस्तु। दीर्घायुरस्तु। कुलगोत्र धनानि सदा सन्तु। सद्धर्म श्रीबलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरहंताणं ह्रौं सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

आयुर्वल्ली विलासं सकलसुकृलैद्राघयित्वाऽऽश्वनल्पम्। धीरं वीरं शरीरं निरुपमुप नयत्वातनोत्वच्छकीर्तिम्।। सिद्धिं वृद्धिं समृद्धिं प्रथयतु तरणि: स्फूर्यदुच्चै: प्रतापं। कान्तिं शान्तिं समाधिं वितरतु भवतामुत्तमा शान्तिधारा।। सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र सामान्य तपोधनानाम्। देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञ:, करोतु शान्तिं भगवान् जिनेन्द्र:।।

शांति शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां।
शांति निरन्तर तपोभव भावितानां।।
शांति: कषाय जय जृम्भित वैभवानां।
शांति: स्वभाव महिमान मुपागतानां।।

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्र सामान्य तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान जिनेन्द्रः॥
अज्ञान महातम के कारण, हम व्यर्थ कर्म कर लेते हैं।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, प्रभु शांती धारा देते हैं॥
अर्घ-जल गंधाक्षत पुष्पचरु फल, दीप धूप का अर्घ्य बनाय।
'विशद'भाव से शांति धार दे, श्री जिनपद में दिया चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं श्री क्लीं त्रिभुवनपते शान्तिधारां करोमि नमोऽर्हते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

"श्री चन्द्रप्रभु जी का अर्घ्य"

चन्द्र चाँदनी से भी शीतल, रहे प्रभु के सुगुण विशेष।
इन्द्र नरेन्द्र खगेन्द्र आपकी, महिमा गाते हे चन्द्रेश!॥
प्रकट हुए देहरे की भू से, श्रावण सुदि दशमी शुभकार।
सन् उन्नीस सौ छप्पन में शुभ, भक्त किए सब जय-जयकार॥

जल चंदन अक्षत कुसुमांजलि, चरुवर दीप धूप फल साथ।
तव चरणों में अर्घ्य चढ़ाते, विशद भाव से हम हे नाथ!।

ॐ ह्रीं देहरा तिजारा भूगर्भ प्रगटित मनोंवांछित फल प्रदाता श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

"चरण छतरी का अर्घ्य"

प्रकट हुए जिस भूमि से, चन्द्र प्रभू जिनराज।
अर्घ्य चढ़ाते हैं विशद, जिन चरणों में आज॥

ॐ ह्रीं देहरा-तिजारा स्थित श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्र प्रकट स्थले जिन चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अभिषेक समय की आरती

(तर्ज : आनन्द अपार है....)

जिनवर का दरबार है, भक्ती अपरम्पार है।
जिनबिम्बों की आज यहाँ पर, होती जय-जयकार है॥टेक॥

दीप जलाकर आरति लाए, जिनवर तुमरे द्वार जी।
भाव सहित हम गुण गाते हैं, हो जाए उद्धार जी।।1।।जिनवर...
मिथ्या मोह कषायों के वश, भव सागर भटकाए हैं।
होकर के असहाय प्रभू जी, द्वार आपके आए हैं।।2।।जिनवर...
शांती पाने श्री जिनवर का, हमने न्हवन कराया जी।
तारण तरण जानकर तुमको, आज शरण में आया जी।।3।।जिनवर.
हम भी आज शरण में आकर, भक्ती से गुण गाते हैं।
भव्य जीव जो गुण गाते वह, अजर अमर पद पाते हैं।।4।।जिनवर...
नैय्या पार लगा दो भगवन्, तव चरणों सिरनाते हैं।
'विशद' मोक्ष पद पाने हेतू, सादर शीश झुकाते हैं।।5।।जिनवर का....!

लघु विनय पाठ (दोहा)

पूजा विधि से पूर्व यह, पढ़ें विनय से पाठ।
धन्य जिनेश्वर देवजी, कर्म नशाए आठ।।1।।

शिव वनिता के ईश तुम, पाए केवल ज्ञान।
अनन्त चतुष्टय धारते, देते शिव सोपान।।2।।
पीड़ा हारी लोक में, भव दधि नाशनहार।
ज्ञायक हो त्रयलोक के, शिवपद के दातार।।3।।
धर्मामृत दायक प्रभो!, तुम हो एक जिनेन्द्र।
चरण कमल में आपके, झुकते विनत शतेन्द्र।।4।।
भवि जन को भव-सिन्धु में, एक आप आधार।
कर्म बन्ध का जीव के, करने वाले क्षार।।5।।
चरण कमल तव पूजते, विघ्न रोग हो नाश।
भवि जीवों को मोक्ष पथ, करते आप प्रकाश।।6।।
यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाए राग।
दर्श ज्ञान दे आपका, जग को विशद विराग।।7।।
एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार।
अतः भक्त बन के प्रभो!, आया तुमरे द्वार।।8।।

मंगल पाठ

मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योपाध्याय संत।
धर्मागम की अर्चना, से हो भव का अंत॥9॥
मंगल जिनगृह बिम्ब जिन, भक्ती के आधार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार॥10॥

॥इत्याशीर्वाद: पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

अथ पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

ॐ ह्रीं अनादिमूल मंत्रेभ्योनम:। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो, धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो, धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरिहंते शरणं पव्वज्जामि, सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं, धम्मं शरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

मंगल विधान

शुद्धाशुद्ध अवस्था में कोई, णमोकार को ध्याये।
पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाए।
सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए।
विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनि, बाधा ना रह पाए।

॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्पचरू, दीप धूप फल साथ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, पूज रहे जिन नाथ!॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंच कल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा॥1॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधूभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टाधिक सहस्त्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीं द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरणकमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।5।।

"पूजा प्रतिज्ञा पाठ"

अनेकांत स्याद्वाद के धारी, अनन्त चतुष्टय विद्यावान।
मूल संघ में श्रद्धालू जन, का करने वाले कल्याण।

तीन लोक के ज्ञाता दृष्टा, जग मंगलकारी भगवान।
भाव शुद्धि पाने हे स्वामी!, करता हूँ मैं भी गुणगान॥1॥
निज स्वभाव विभाव प्रकाशक, श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों के, विस्तृत ज्ञानी हे भगवान!
हे अर्हन्त! अष्ट द्रव्यों का, पाया मैंने आलम्बन।
होकर के एकाग्रचित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन॥2॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपामि।

"स्वस्ति मंगल पाठ"

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पदम सुपार्श्वजिनेश।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश।।
विमलानन्त धर्म शांती जिन, कुन्थु अरहमल्ली दें श्रेय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय॥

इति श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर स्वस्ति मंगल विधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि।

"परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ"

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके, हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान।।
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।
निस्पृह होकर करें साधना, 'विशद' करें स्व पर कल्याण।।1।।
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नौं भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे महान।।
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान।।2।।
भेद आठ औषधि ऋद्धि के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश।।
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज।।3।।

।। इति परमर्षि-स्वस्ति-मंगल-विधानं।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

श्री देव शास्त्र गुरु पूजन

स्थापना

देव-शास्त्र-गुरु पद नमन, विद्यमान तीर्थेश।
सिद्ध प्रभु निर्वाण भू, पूज रहे अवशेष।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल छन्द)

जल के यह कलश भराए, त्रय रोग नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

शुभ गंध बनाकर लाए, भवताप नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व.स्वाहा।

अक्षत हम यहाँ चढ़ाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व.स्वाहा।

सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, रुज काम से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

पावन नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत का ये दीप जलाएँ, अज्ञान से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

ताजे फल यहाँ चढ़ाएँ, शुभ मोक्ष महाफल पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

पावन ये अर्घ्य चढ़ाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- शांतीधारा कर मिले, मन में शांति अपार।
अतः भाव से आज हम, देते शांती धर।।

शान्तये शांतिधारा

दोहा- पुष्पाञ्जलिं करते यहाँ, लिए पुष्प यह हाथ।
देव शास्त्र गुरु पद युगल, झुका रहे हम माथ।।

पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा- देव-शास्त्र-गुरु के चरण, वन्दन करें त्रिकाल।
'विशद' भाव से आज हम, गाते हैं जयमाल॥

(तामरस छद्र)

जय-जय-जय अरहंत नमस्ते, मुक्ति वधू के कंत नमस्ते।
कर्म घातिया नाश नमस्ते, केवलज्ञान प्रकाश नमस्ते।
जगती पति जगदीश नमस्ते, सिद्ध शिला के ईश नमस्ते।
वीतराग जिनदेव नमस्ते, चरणों विशद सदैव नमस्ते॥
विद्यमान तीर्थेश नमस्ते, श्री जिनेन्द्र अवशेष नमस्ते।
जिनवाणी ॐकार नमस्ते, जैनागम शुभकार नमस्ते।
वीतराग जिन संत नमस्ते, सर्व साधु निर्ग्रन्थ नमस्ते।
अकृत्रिम जिनबिम्ब नमस्ते, कृत्रिम जिन प्रतिबिम्ब नमस्ते॥
दर्श ज्ञान चारित्र नमस्ते, धर्म क्षमादि पवित्र नमस्ते।

तीर्थ क्षेत्र निर्वाण नमस्ते, पावन पञ्चकल्याण नमस्ते।
अतिशय क्षेत्र विशाल नमस्ते, जिन तीर्थेश त्रिकाल नमस्ते।
शास्वत तीरथराज नमस्ते, 'विशद' पूजते आज नमस्ते॥

दोहा- अर्हतादि नव देवता, जिनवाणी जिन संत।
पूज रहे हम भाव से, पाने भव का अंत॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- देव-शास्त्र-गुरु पूजते, भाव सहित जो लोग।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य पा, पावें शिव का योग॥

॥ इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत)॥

मूलनायक सहित समुच्चय अर्घ्य

अष्टम वसुधा पाने को यह, अर्घ्य बनाकर लाए हैं।
अष्टगुणों की सिद्धी पाने, तव चरणों में आए हैं॥
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।

सहस्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष॥
देव-शास्त्र-गुरु धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमा -कृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक 1008 श्री..... सहित पंचकल्याणक पदालंकृत सर्व जिनेश्वर, श्री अरहंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्व साधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य जिनचैत्यालय, रत्नत्रय-दशलक्षण-सोलहकारण-त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय कैलाश गिरि-सम्मेद शिखर-गिरनार-चम्पापुर-पावापुर आदि निर्वाण क्षेत्र अतिशय क्षेत्र, तीस चौबीसी के सात सौ बीस तीर्थंकर; विद्यमान बीस तीर्थंकर, तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो सम्पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल का अर्घ्य

जल के यह कलश भराए, हम भेंट हेतू यह लाए।
तुम क्षेत्र के रक्षाकारी, हे क्षेत्रपाल मनहारी॥

ॐ आं क्रों विघ्वंशनायजिन शासन रक्षक क्षेत्रपालाय अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभु जी की पूजा

स्थापना

यश तीनों लोकों में जिनका, खुश होके गाया जाता है।
प्रमुदित होके हर भक्त विशद, जिनके पद माथ झुकाता है॥
जिन चरणों में जगती सारी, अपनी जो आस लगाती है।
श्री चन्द्र प्रभू देहरे वाले के, द्वार पूर्ण हो जाती हैं॥
दोहा– भक्त खड़े हैं द्वार पर, कृपा करो भगवान।
भर दो झोली हे प्रभू, करते हैं आह्वान॥

ॐ ह्रीं सर्व संकटहारी देहरा स्थित अतिशयकारी श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निध्किरणम्।

(तर्ज–माता तू दया करके...)

हम पर में भटकाए, निज को ना जाना है।
त्रय रोग नशाने को, यह नीर चढ़ाना है।।
देहरे वाले बाबा, श्री चन्द्रप्रभू स्वामी।
झोली मेरी भर दो, हे जिन! अन्तर्यामी।।1।।

ॐ ह्रीं सर्व संकटहारी देहरा तिजारा स्थित श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन की शीतलता, बहु सौख्य दिलाती है।
तव वाणी हे जिनवर!, भव ताप नशाती है।।
देहरे वाले बाबा, श्री चन्द्रप्रभू स्वामी।
झोली मेरी भर दो, हे जिन! अन्तर्यामी।।2।।

ॐ ह्रीं सर्व संकटहारी देहरा तिजारा स्थित श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षण भंगुर जग सारा, हम नहीं जान पाये।
अब अक्षय पद पाने, हे नाथ! शरण आये।।
देहरे वाले बाबा, श्री चन्द्रप्रभू स्वामी।
झोली मेरी भर दो, हे जिन! अन्तर्यामी।।3।।

ॐ ह्रीं सर्व संकटहारी देहरा–तिजारा स्थित श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान निर्वपामीति स्वाहा।

हम काम बाण नाशी, यह पुष्प चढ़ाते हैं।
शरणागत बनकर के, प्रभु शीश झुकाते हैं।।
देहरे वाले बाबा, श्री चन्द्रप्रभू स्वामी।
झोली मेरी भर दो, हे जिन! अन्तर्यामी।।4।।

ॐ ह्रीं सर्व संकटहारी देहरा तिजारा स्थित श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

तृष्णा का क्षय करके, प्रभु समरस पा जाएँ।
चउ संज्ञा क्षय करके, आतम का रस पाएँ।।
देहरे वाले बाबा, श्री चन्द्रप्रभू स्वामी।
झोली मेरी भर दो, हे जिन! अन्तर्यामी।।5।।

ॐ ह्रीं सर्व संकटहारी देहरा तिजारा स्थित श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान नशे मेरा, निज आतम दीप जले।
जो मोह तिमिर छाया, अब मेरा पूर्ण गले।।
देहरे वाले बाबा, श्री चन्द्रप्रभू स्वामी।
झोली मेरी भर दो, हे जिन! अन्तर्यामी।।6।।

ॐ ह्रीं सर्व संकटहारी देहरा तिजारा स्थित श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की शक्ती से, हम हारे हैं स्वामी।
वह नाशो अब मेरे, हे जिन! अन्तर्यामी।
देहरे वाले बाबा, श्री चन्द्रप्रभू स्वामी।
झोली मेरी भर दो, हे जिन! अन्तर्यामी।।7।।

ॐ ह्रीं सर्व संकटहारी देहरा तिजारा स्थित श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ फल से राग किया, हमने बहु दुख पाये।
फल चढ़ा रहे स्वामी, शिव फल पाने आये।।
देहरे वाले बाबा, श्री चन्द्रप्रभू स्वामी।
झोली मेरी भर दो, हे जिन! अन्तर्यामी।।8।।

ॐ ह्रीं सर्व संकटहारी देहरा तिजारा स्थित श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम शिव पद पाने को, यह अर्घ्य चढ़ाते हैं।
तुम हो प्रभु अविकारी, हम महिमा गाते हैं।।

देहरे वाले बाबा, श्री चन्द्रप्रभू स्वामी।
झोली मेरी भर दो, हे जिन! अन्तर्यामी।।9।।

ॐ ह्रीं सर्व संकटहारी देहरा तिजारा स्थित श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– शांती धारा हम यहाँ, देते चरण समीप।
हे जिनेन्द्र! मेरे हृदय, जले ज्ञान का दीप।।

।।शान्तये शान्तिधारा।।

दोहा– पुष्पाञ्जलि को पुष्प यह, लाये हम भगवान।
जब तक मुक्ती ना मिले, करें आपका ध्यान।।

।।पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

(सखी छन्द)

पाँचे वदि चैत निराली, जिन गृह में छाई लाली।
गर्भागम देव मनाए, जिन माँ के गर्भ में आए।।1।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा पंचम्या गर्भकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वदि पौष एकादशि आई, सारी जगती हर्षाई।
सुर जन्म कल्याण मनाएँ, सब ताण्डव नृत्य कराएँ।।2।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि पौष एकादशि पाए, जिनवर वैराग्य जगाए।
क्षण भंगुर यह जग जाना, निज का स्वरूप पहचाना।।3।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदि सातैं जानो, प्रभु हुए केवली मानो।
सुर समवशरण बनवाए, जग को सन्मार्ग दिखाए।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा सप्तयां केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

फागुन सुदि सातें पाई, मुक्ती वधु जो परणाई।
प्रभु सारे कर्म नशाए, शिवपुर में धाम बनाए।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला सप्तम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चन्द्र प्रभु प्रगट तिथि का अर्घ्य

संवत् दो हजार तेरह शुभ, श्रावण सुदि दशमी गुरुवार
चन्द्रप्रभु देहरे में प्रगटे,हुई धरा पर जय-जयकार
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते, श्री जिन के चरणों शुभकार
चन्द्रप्रभु के पद में वन्दन, "विशद" भाव से बारम्बार

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्ल दशम्यां देहरा स्थाने प्रगट रूपाय अतिशयकारी सर्वसंकटहारी श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- भक्तों को तुम हे प्रभो!, करते मालामाल।
देहरे वाले चन्द्र जिन, की गाते जयमाल।।

(वेसरी छन्द)

चन्द्र प्रभु तुम जग हितकारी, महिमा तुमरी जग से न्यारी।
देवों के तुम देव कहाते, जग के प्राणी तुमको ध्याते।।
पूर्व भवों में पुण्य कमाया, तुमने तीर्थंकर पद पाया।
वैजयन्त से चयकर आए, पञ्चकल्याणक देव मनाए।।
महासेन के राज दुलारे, माँ सुलक्षणा के हो प्यारे।
चन्द्रपुरी में जन्म उपाए, गिरि सम्मेद से मोक्ष सिधए।।
अलवर जिला में नगर तिजारा, देहरे का है अजब नजारा।
जब भी मुनिवर नगर में आते, टीले में प्रतिमा बतलाते।।
जहाँ पे टीला था शुभकारी, जंगल फैला था भयकारी।
भारत में आई आजादी, बढ़ने लगी यहाँ आबादी।।

शासन के आदेश से भाई, चौड़ी सड़क वहाँ करवाई।
उस टीले की हुई खुदाई, उसमें प्रतिमा दई दिखाई॥
त्रय खण्डित प्रतिमाएँ पाए, मन में श्रावक आस लगाए।
कई दिनों तक चली खुदाई, किन्तू जिन प्रतिमा ना पाई॥
वैद्य बिहारी यहाँ के गाए, पत्नी सरस्वती कहलाए।
स्वप्न रात में उसको आया, उसने प्रभु का दर्शन पाया॥
दीपक ले देहरे पे आई, उसने रेखा वहाँ बनाई।
प्रातः लोग वहाँ पर आए, धीरे-धीरे भूमि खुदाए॥
चन्द्रप्रभु की प्रतिमा पाए, लोग सभी मन में हर्षाए।
खुश हो जय-जयकार लगाए, यात्री उनके दर्शन पाए॥
श्रावण सुदि दशमी शुभकारी, तिथि हो गई पावन मनहारी।
अतिशय हुए जहाँ पे भारी, वाञ्छित फल पाए नर नारी॥
पुत्र हीन सुन्दर सुत पाए, निर्धन मन वाञ्छित फल पाए।
बुद्धि हीन सद्बुद्धि जगाए, रोगों से कई मुक्ती पाए॥
भूत प्रेत की हो बाधाएँ, प्राणी उनसे मुक्ती पाएँ।

दीप जलाकर आरति गाते, प्रभु के ऊपर छत्र चढ़ाते॥
चालीसा जो मन से ध्याते, उनके कार्य सिद्ध हो जाते।
प्रभु के दर जो प्राणी आते, अपने वे सौभाग्य जगाते॥

दोहा- 'विशद' भाव से हे प्रभो!, करते हम गुणगान।
पूरी हो मम् कामना, चन्द्र प्रभू भगवान॥

ॐ ह्रीं देहरा तिजारा स्थित अतिशयकारी श्री चन्द्र प्रभु जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- चरण कमल में आपके, झुका रहे हम शीश।
ऋद्धि सिद्धि सम्पति बढ़े, हे त्रिभुवन पति ईश॥

।।इत्याशीर्वाद।।

प्रथम वलयः(अर्घ्यावली)

दोहा- कर्म घातिया नाशकर, अनन्त चतुष्टय वान।
जिनकी अर्चा हम करें, पाने शिव सोपान॥

प्रथम वलयोपरिपुष्पांजलिं क्षिपेत्

(चाल छन्द)

जो ज्ञानावरण नशाए, वे केवल ज्ञान जगाए।
हम चन्द्रप्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणकर्मविनाशक केवलज्ञानप्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हैं दर्शावरण विनाशी, प्रभु दर्शानन्त प्रकाशी।
हम चन्द्रप्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरणकर्मविनाशक केवलदर्शनप्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो मोह कर्म विनशाए, वे सुखानन्त को पाए।
हम चन्द्रप्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं मोहनीयकर्मविनाशक अनंत सुख प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो अन्तराय विनशाए, वे वीर्यानन्त जगाए।
हम चन्द्रप्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं अंतरायकर्मविनाशक अनन्तवीर्य प्राप्तश्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु घातिकर्म नशाए, तव अनन्त चतुष्टय पाए।
हम चन्द्रप्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं घातिकर्मविनाशक अनन्तचतुष्टय प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्वितिय वलय

दोहा- प्रातिहार्य वसु प्राप्त हैं, चन्द्र प्रभू भगवान।
विशद भाव से आज हम, करते हैं गुणगान।।

द्वितिय वलयोपरिपुष्पांजलिं क्षिपेत्

(चौपाई)

तरुवर अशोक शुभकारी है, जो सारे शोक निवारी है।
जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिन की महिमा दर्शाता है।।1।।

ॐ ह्रीं अशोक तरु सत्प्रातिहार्य सहित श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंहासन रत्न जड़ित जानो, जिसपे आसन जिनका मानो।
जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिन की महिमा दर्शाता है।।2।।

ॐ ह्रीं सिंहासन सत्प्रातिहार्य सहित श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रय क्षत्र आपके शीश रहे, त्रिभुवन के स्वामी आप कहे।
जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिनकी महिमा दर्शाता है।।3।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रय सत्प्रातिहार्य सहित श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भामण्डल आभा दर्शाए, जो सप्त भवों को दिखलाए।
जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिनकी महिमा दर्शाता है।।4।।

ॐ ह्रीं भामण्डलसत्प्रातिहार्य सहित श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो दिव्य ध्वनि ॐकार मयी, जो गाई पावन कर्म क्षयी।
जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिनकी महिमा दर्शाता है।।5।।

ॐ ह्रीं दिव्य ध्वनि सत्प्रातिहार्य सहित श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शुभ देव दुन्दुभि वाद्य बजे, जहाँ अतिशयकारी साज सजे।
जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिनकी महिमा दर्शाता है।।6।।

ॐ ह्रीं देवदुन्दुभि सत्प्रातिहार्य सहित श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुर चॅवर ढौरते हैं भाई, प्रभु की दर्शाते प्रभुताई।
जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिनकी महिमा दर्शाता है।।7।।

ॐ ह्रीं चतुषष्टि चँवर सत्प्रातिहार्य सहित श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर पुष्प वृष्टि कर हर्षाएँ, जिनवर की महिमा दर्शाएँ।
जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिनकी महिमा दर्शाता है।।8।।

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य सहित श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु प्रातिहार्य शुभकारी हैं, जिनकी महिमा अतिभारी है।
जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिनकी महिमा दर्शाता है।।9।।

ॐ ह्रीं अष्टमहाप्रातिहार्य सहित श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तृतिय वलयः

दोहा - श्री जिन की अर्चा किए, होंय उपद्रव शांत।
पुष्पांजलि करते यहाँ, अर्घ्य हेतु उपरांत।।

तृतीय वलयोपरिपुष्पांजलिं क्षिपेत्

(चाल छन्द)

हम और पे जोर चलाते, अन्तर में क्रोध जगाते।
वह क्रोध नाश हो जाए, हम पूजा करने आए।।1।।

ॐ ह्रीं परस्पर क्रोध बैर विनाशन समर्थ श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पर से सम्मान न पाते, तब मानी हम हो जाते।।
अब अपना मान गलाएँ, तव चरणों विनय जगाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं मानसिक रोग मान विनाशन समर्थ श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

त्रय योगों की चपलाई, जिससे हो माया भाई।
अब माया पूर्ण नसाएँ, शुभ सरल भाव प्रगटाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं कलंक-माया विनाशन समर्थ श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

जब तक सन्तोष ना आवे, मन में बहु लोभ सतावे।
तृष्णा जग में दुखदायी, निर्लोभ की सुधि मन आई।।4।।

ॐ ह्रीं शांति हारक लोभ विनाशन समर्थ श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

भू कायिक जीव बताए, हमने वे बहुत सताए।
अब हम भी संयम पाएँ, जीवों के प्राण बचाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं पृथ्वी सम्बन्धी दु:ख विनाशन समर्थ श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जल कायिक जीव कहाते, हम उनको सतत सताते।
रक्षा का भाव जगाएँ, उनमें करुणा उपजाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं जल सम्बन्धी समस्याविनाशन समर्थ श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हैं अग्नी कायिक प्राणी, हम घाते हो अज्ञानी।
अब उन पे दया विचारें, ना अग्नी व्यर्थ में जारें।।7।।

ॐ ह्रीं अग्नि सम्बन्धी समस्या विनाशन समर्थ श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

जो वायू कायिक गाये, वे हमसे दुख बहु पाए।
अब वे भी जीव बचाएँ, उन पर करुणा उपजाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं वायु सम्बन्धी समस्या विनाशन समर्थ श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तरु कायिक जीव कहाए, अज्ञानी हो बहु खाये।
अब उनके कष्ट मिटाएँ, संयम जीवन में पाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं वनस्पति सम्बन्धी समस्या विनाशन समर्थ श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जग में त्रस जीव विचरते, मेरे प्रमाद से मरते।
हम उन पर दया विचारें, पावन समीतियाँ धारें॥10॥

ॐ ह्रीं प्राणी मात्र सम्बन्धी समस्या विनाशन समर्थ श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

स्पर्श आठ बतलाए, जिनके वश हम दुख पाए।
अब इन्द्रिय पर जय पाएँ, जिन चरणों ध्यान लगाएँ॥11॥

ॐ ह्रीं स्पर्शन-दोष विनाशन समर्थ श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

रसना वस हो के भाई, की हमने बहुत लड़ाई।
अब रसना पर जय पाएँ, भक्ती में ध्यान लगाएँ॥12॥

ॐ ह्रीं रसना-दोष विनाशन समर्थ श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कई घ्राणेन्द्रिय वश प्राणी, दुख पाते हो अज्ञानी।
अब घ्राणेन्द्रिय जय पाएँ, मन में समता उपजाएँ॥13॥

ॐ ह्रीं नासिका-दोष विनाशन समर्थ श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

रंगों में सदा लुभाए, जो राग द्वेष करवाए।
हो चक्षू के जयकारी, प्रभु पूजा करें तुम्हारी॥14॥

ॐ ह्रीं दृष्टि दोष विनाशन समर्थ श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हमको संगीत लुभाए, उसमें सन्तुष्टी आए।
अब कर्णेन्द्रिय जय पाएँ, हे नाथ! आपको ध्यायें॥15॥

ॐ ह्रीं कर्णेन्द्रिय-दोष विनाशन समर्थ श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

मन भारी कुटिल कहाए, इन्द्रियों पर हुकुम चलाए।
मन को हम जीतें स्वामी, हो जाएँ नाथ! अकामी॥16॥

ॐ ह्रीं मन विकार हृदय रोग विनाशन समर्थ श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

संकट में जीव दुखारी, हो जाता है संसारी।
श्री चन्द्रप्रभू को ध्याये, संकट से मुक्ती पाए॥

ॐ ह्रीं सर्व संकट निवारण समर्थ श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

॥ शांतयेशातिधारा, दिव्य पुष्पांजलिंक्षिपेत्॥

जाप्य :- ॐ ह्रीं सर्वसंकटहारी मनोवांछित फल प्रदाता देहरा तिजारा स्थित श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः या ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

दोहा–भक्तों को तुम हे प्रभो!, करते मालामाल।
तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभ, की गाते जयमाल॥

हे ज्ञान दिवाकर चन्द्र प्रभो! जय धर्म प्रभाकर चन्द्र प्रभो!
जय शांति सुधाकर चन्द्र प्रभो!, हे चन्द्र प्रभो! जय चन्द्र प्रभो! ॥1॥
हे धर्म प्रचारक चन्द्र प्रभो!, हे कष्ट निवारक चन्द्र प्रभो!
हे रोग विनाशक चन्द्र प्रभो!, हे चन्द्र प्रभो! जय चन्द्र प्रभो!॥2॥
हे धर्म विधायक चन्द्र प्रभो!, हे शांति प्रदायक चन्द्र प्रभो!
हे शिव दर्शायक चन्द्र प्रभो!, हे चन्द्र प्रभो! जय चन्द्र प्रभो!॥3।
हे रोग निवारक चन्द्र प्रभो! हे द्वेष निवारक चन्द्र प्रभो!।
हे कर्म विघातक चन्द्र प्रभो! , हे चन्द्र प्रभो! जय चन्द्र प्रभो!॥4॥
हे जय श्री रति नायक चन्द प्रभो!, जय-जय श्री दायक चन्द्र प्रभो!।
हे विघ्न विनायक चन्द्र प्रभो! जय चन्द्र प्रभो! हे चन्द्र प्रभो!॥5॥

हे पाप विमोचक चन्द्रप्रभो!, हे आतम शोधक चन्द्र प्रभो!
हे संकट मोचक चन्द्र प्रभो! जय चन्द्र प्रभो! हे चन्द्र प्रभो!॥6॥
जय मुक्ति रमापति चन्द्र प्रभो! जय श्रेष्ठ महायति चन्द्र प्रभो!
जय जय हे जिनपति चन्द्र प्रभो! हे चन्द्र प्रभो! हे चन्द्र प्रभो!॥7॥
हे कर्म विदारक चन्द्र प्रभो! हे बुधि विशारद चन्द्र प्रभो!।
हे शरद नारद चन्द्र प्रभो! हे चन्द्र प्रभो! जय चन्द्र प्रभो!॥8॥

दोहा- श्री जिनेन्द्र की भक्ति है नित नव मंगल वान।
'विशद' भाव से कर मिले, मुक्ती का सोपान॥

ॐ ह्रीं देहरा तिजारा स्थित अतिशयकारी श्री चन्द्र प्रभु जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– चरण कमल में आपके, झुका रहे हम शीश।
ऋद्धि सिद्धि सम्पति बढ़े, हे त्रिभुवन पति ईश॥

।।इत्याशीर्वाद।।

समुच्चय महार्घ्य

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।
जैनागम जिन चैत्य जिनालय, जैन धर्म को शत् वन्दन॥
सोलह कारण धर्म क्षमादिक, रत्नत्रय चौबिस तीर्थेश।
अतिशय सिद्धक्षेत्र नन्दीश्वर, की अर्चा हम करें विशेष॥

दोहा- अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, 'विशद' भाव के साथ।
चढ़ा रहे त्रययोग से, झुका चरण में माथ॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, सरस्वती देव्यै, सोलहकारण भावना, दशलक्षण धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, नन्दीश्वर, पंचमेरु सम्बन्धी चैत्य-चैत्यालय, कैलाश गिरि, सम्मेद शिखर, गिरनार, चम्पापुर, पावापुर आदि निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, तीस चौबीसी, तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो समुच्चय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पुष्पक्षेपण करते हुए शांति पाठ बोलें)

शांतिपाठ

शांतिनाथ शांती के दाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
परम शांत मुद्रा जो धारे, जग जीवों के तारण हारे॥
शरण आपकी जो भी आते, वे अपने सौभाग्य जगाते।
शांतिपाठ पूजा कर गाएँ, पुष्पांजलि कर शांति जगाएँ॥
जिन पद शांती धार कराएँ, जीवन में सुख शांति पाएँ-3।
जीवों को सुख शांति प्रदायी, धर्म सुधामृत के वरदायी॥
शांतिनाथ दुख दारिद नाशी, सम्यक्दर्शन ज्ञान प्रकाशी।
राजा प्रजा भक्त नर-नारी, भक्ति करें सब मंगलकारी॥
जैन धर्म जिन आगम ध्यायें, परमेष्ठी पद शीश झुकाएँ।
श्री जिन चैत्य जिनालय भाई, विशद बनें सब शांति प्रदायि॥

ॐ शांति-शांति-शांति(दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्) (कायोत्सर्ग करें)

विसर्जन पाठ

भूल हुई हो जो कोइ, जान के या अन्जान।
बोधि हीन मैं हूँ विशद, क्षमा करो भगवान॥
ज्ञान ध्यान शुभ आचरण, से भी हूँ मैं हीन।
सर्व दोष का नाश हो, शुभाचरण हो लीन॥
पूजा अर्चा में यहाँ, आए जो भी देव।
करूँ विसर्जन भाव से, क्षमा करो जिन देव॥

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।(ठोने में पुष्पक्षेपण करें)

आशिका लेने का मंत्र

पूजा कर आराध्य की, धरें आशिका शीश।
विशद कामना पूर्ण हो, पाएँ जिन आशीष॥

देहरा तिजारा के अतिशयकारी श्री चन्द्रप्रभु भगवान का चालीसा

दोहा- श्री जिनेन्द्र को नमन कर, जिनवाणी को ध्याय।
वीतराग निर्ग्रन्थ गुरु, के चरणों सिरनाय॥
देहरे के जिन चन्द्र का, चालीसा शुभकार।
'विशद' भाव से गा रहे, पाने सौख्य अपार॥

(चौपाई)

जय श्री चन्द्र प्रभू जिन स्वामी, देहरे वाले शिव पथ गामी॥1॥
शांत छवी मूरत अविकारी, भेष दिगम्बर मुद्रा प्यारी॥2॥
जिनवर नाशा दृष्टिधारी, सर्व जगत में मंगलकारी॥3॥
देवों के जो देव कहाते, सद्भक्तों के कष्ट मिटाते॥4॥
वैजयन्त से चयकर आए, गर्भकल्याण श्री जिन पाए॥5॥
चैत कृष्ण पाँचे शुभकारी, देव रत्न वर्षाए भारी॥6॥
चन्द्रपुरी नगरी कहलाए, महासेन जी राज्य चलाए॥7॥
रही सुलक्षणा जिनकी रानी, जन्मे चन्द्र प्रभू जिन स्वामी॥8॥

पौष वदी ग्यारस कहलाई, सारी जगती हर्ष मनाई।।9।।
जग हितकारी राज्य चलाया, किन्तू जग वैभव ना भाया।।10।।
पौष कृष्ण एकादशि पाए, प्रभु मन में वैराग्य जगाए।।11।।
राग त्याग मुनि दीक्षा धारी, ध्यान किए होके अविकारी।।12।।
फाल्गुण वदी सप्तमी पाए, प्रभुजी केवल ज्ञान जगाए।।13।।
गिरि सम्मेद शिखर पे आए, फाल्गुन शुक्ल सप्तमी गाए।।14।।
ललित कूट पावन कहलाए, मोक्ष जहाँ से प्रभु जी पाए।।15।।
समंतभद्र मुनि तुमको ध्याए, पिण्डी फटी दर्श तुम पाए।।16।।
अष्टम तीर्थंकर कहलाते, सोम सुग्रह से शांति दिलाते।।17।।
चमत्कार तुम कई दिखलाए, मन से लोग आपको ध्याये।।18।।
राजस्थान प्रान्त है प्यारा, अलवर जिला में नगर तिजारा।।19।।
उत्तर दिश में देहरा जानो, प्रगटे जहाँ चन्द्र प्रभु मानो।।20।।
सावन सुदि दशमी शुभकारी, तिथि हो गई ये मंगलकारी।।21।।
चिन्ह चन्द्रमा का शुभ पाए, नर नारी जयकार लगाए।।22।।
धवल मूर्ति सोहे मनहारी, जो है पावन अतिशयकारी।।23।।

अतिशय तुमने कई दिखाए, जनता दौड़ी-दौड़ी आए।।24।।
कोई चरणों पूज रचाते, कोई पावन आरति गाते।।25।।
कोई विशद विधान रचाते, कोई शुभ चालीसा गाते।।26।।
फाल्गुन सुदी सप्तमी जानो, भारी मेला जुड़ता मानो।।27।।
शशिधर पावन आप कहाए, ज्ञान प्रकाश आप फैलाए।।28।।
कीर्ति आपकी फैली भारी, गुण गाती है दुनिया सारी।।29।।
भूत प्रेत भी जिन्हें सतावें, उनसे प्राणी मुक्ती पावें।।30।।
दुखिया दर पे जो भी आते, उनके सब संकट कट जाते।।31।।
अन्धा दर पे ज्योती पाए, गूंगे का गूंगापन जाए।।32।।
पुत्रहीन दर पे जो आए, पुत्र सौख्य वह प्राणी पाए।।33।।
ज्ञान हीन सद् ज्ञान जगाए, बुद्धि हीन सद् बुद्धी पाए।।34।।
रोगी अपना रोग नशाए, पर कृत मंत्र भयावह जाए।।35।।
लाखों आते यहाँ सवाली, जाएं नहीं यहाँ से खाली।।36।।
चरणों की रज है सुखकारी,जीवों के सब संकटहारी।।37।।
गंधोदक जो माथ लगावें, अतिशय शांती प्राणी पावें।।38।।

अखण्ड ज्योति का घृत जो लगाते, उनके सब संकट कट जाते॥39॥
'विशद' आपको जो भी ध्याते, वे अपने सौभाग्य जगाते॥40॥

दोहा - चालीसा चालीस दिन, पढ़के चालिस बार।
पढ़ो पढ़ाओ भक्ति से, पाओ शांति अपार॥
रोग शोक दुख दूर हों, और पाप का नाश।
धन सम्पति का लाभ हो, हो शिवपुर में वास॥

मनोकामनापूर्ण जाप्य—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री देहरे वाले चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः

देहरा के अतिशयकारी श्री चन्द्रप्रभु जी की आरती

(तर्ज-करहु आरती आज जिनेश्वर तुमरे द्वारे...)

करहुँ आरती आज, जिनेश्वर देहरे वाले।
देहरे वाले स्वामी देहरेवाले, चन्द्र प्रभु जिनराज॥
जिनेश्वर देहरे वाले॥टेक॥
तुम हो तीन काल के ज्ञाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।

तारण तरण जहाज-जिनेश्वर देहरे वाले॥1॥ करहुँ...
मात सुलक्षणा के तुम प्यारे, महासेन के राज दुलारे।
चन्द्रपुरी जिनराज-जिनेश्वर देहरे वाले॥2॥ करहुँ...
सावन सुदी दशमी शुभ गाई, प्रकट हुए चन्द्रप्रभु भाई।
आई सकल समाज-जिनेश्वर देहरे वाले॥3॥ करहुँ...
अलवर जिले में नगर तिजारा, देहरे का है अजब नजारा।
भक्त बजावें साज-जिनेश्वर देहरे वाले॥4॥ करहुँ...
दुखियाँ दर पे जो भी आते, उनके सब संकट कट जाते।
होवें पूरे काज-जिनेश्वर देहरे वाले॥5॥ करहुँ...
दूर-दूर से यात्री आवें, 'विशद' भाव से दीप जलावें।
भक्त शरण में आज-जिनेश्वर देहरे वाले॥6॥ करहुँ...
करहुँ आरती आज, जिनेश्वर देहरे वाले।
देहरे वाले स्वामी देहरे वाले, चन्द्र प्रभु जिनराज॥
जिनेश्वर देहरे वाले...॥टेक॥

पंचपरमेष्ठी की आरती *तर्ज - भक्ति बेकरार है.....*

अर्हंत-सिद्ध-आचार्य हैं, उपाध्याय-मुनिराज हैं।
परमेष्ठी जिन पांचों की शुभ, आरती करते आज हैं।।टेक।।
प्रथम आरती अर्हंतों की, केवलज्ञान के धारी जी-2
अनन्त चतुष्टय पाने वाले, पावन हैं अविकारी जी-2 अर्हंत-सिद्ध.....।।1।।
अष्टकर्म के नाशी पावन, सिद्ध प्रभू कहलाए जी-2
सिद्ध शिला पर धाम बनाए, सुखानन्त जो पाए जी-2 अर्हंत-सिद्ध.....।।2।।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, होते पञ्चाचारी जी-2
छत्तिस मूल गुणों को पाते, होते हैं अविकारी जी-2 अर्हंत-सिद्ध.....।।3।।
ग्यारह अंग पूर्व चौदह सब, पच्चिस गुण प्रगटाते हैं-2
ज्ञान-ध्यान-तप मे रत मुनि को, पावन ज्ञान सिखाते हैं-2 अर्हंत-सिद्ध.....।।4।।
विषयाशा के त्यागी मुनिवर, संगारम्भ से हीन रहे-2
सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित धर, वीतराग जिन संत कहे-2 अर्हंत-सिद्ध.....।।5।।
अर्हंत-सिद्धाचार्य-उपाध्याय, सर्व साधु को ध्यायें जी-2
'विशद' आरती करके पद में, सादर शीश झुकाएँ जी-अर्हंत सिद्ध.....।।6।।

देहरा के श्री चन्द्रप्रभु भगवान की आरती

(तर्ज–ॐ जय...)

ॐ जय चन्द्रप्रभु स्वामी, जय चन्द्र प्रभु स्वामी।
चन्द्रपुरी अवतारी, मुक्ती पथगामी।।ॐ जय...।।टेक।।
महासेन घर जन्में, धर्म ध्वजाधारी।-2
स्वर्ग मोक्ष पदवी के दाता, ऋषिवर अनगारी।।ॐ जय...।।1।।
आतम ज्ञान जगाएँ, सद्दृष्टी धारी।-2
मोह महामद नाशी, स्व-पर उपकारी।।ॐ जय...।।2।।
पंच महाव्रत प्रभुजी, तुमने जो धारे।-2
समिति गुप्ति के द्वारा, कर्म शत्रु जारे।।ॐ जय...।।3।।
तुमको ध्याने वाला, सुख शांती पावे।-2
'विशद' आरती करके, मन में हर्षावे।।ॐ जय...।।5।।
देहरे वाले बाबा तेरे, द्वारे हम आये।-2

भाव सहित प्रभु तुमरे, हमने गुण गाये।।ॐ जय...।।6।।
तुम करुणा के सागर, हम पर कृपा करो।-2
भक्त खड़ा चरणों में, सारे कष्ट हरो।।ॐ जय...।।7।।

श्री पार्श्वनाथ भगवान की आरती

तर्ज- भक्ति बेकरार है.....

पार्श्वनाथ दरबार है, अतिशय मंगलकार है।
पार्श्व प्रभु की आरति करके, होते भव से पार है।।टेक।।
अश्वसेन वामा माता के, अनुपम राजदुलारे जी-2
युवा अवस्था में गृह त्यागे, मुनिवर दीक्षा धारे जी-2।पार्श्वनाथ.
सरिता के तट पर आ करके, प्रभु जी ध्यान लगाए थे-2।
पूर्व वैर को जान कमठ ने, पत्थर बहु बरसाये थे-2।।पार्श्वनाथ।1।
समताधार प्रभु ने अनुपम, केवलज्ञान जगाया था-2।
नत होकर के धन कुबेर ने, समवशरण बनवाया था-2।।पार्श्वनाथ।2।
ॐकार मय दिव्य देशना, जग को श्रेष्ठ सुनाए थे-2।

प्राणी श्रद्धा ज्ञान आचरण, प्रभु पद में कई पाए थे-2।।पार्श्वनाथ।3।
गिरि सम्मेद शिखर पर जाकर, सारे कर्म विनाश किए-2।
यह संसार वास तजकर के, सिद्ध शिला पर वास किए-2।।पार्श्वनाथ4।
क्षेत्र तिजारा में प्रभु तुमने, अतिशय कई दिखलाए जी-2
"विशद" आरती पूजा करके, प्राणी पुण्य कमाए जी-2।।

"चन्द्रगिरि के श्री चन्द्रप्रभु जी की आरती"

तर्ज- करुँ आरती आज..

करूँ आरती देहरे के प्रभु, चन्द्र गिरि के चंद्र की।
चन्द्रपुरी में जन्म लिए हैं, धरणराज के नन्द की।।
चैत कृष्ण पाँचे को स्वामी, गर्भागम तुमने पाया।
रत्न वृष्टि कर इन्द्रराज भी, अपने मन में हर्षाया।।
पूर्व भवों में पुण्य योग से, प्रकृति तीर्थंकर बंध की।
करूँ आरती देहरे के प्रभु, चन्द्र गिरि के चंद्र की।।1।।
पौष वदि एकादशि को प्रभु, चन्द्रपुरी में जन्म लिए।

मेरु सुगिरि पे इन्द्र सभी मिल, जिनवर का अभिषेक किए॥
द्वार-द्वार पर बजी बधाई, जय हो श्री जिन चंद की।
करूँ आरती...॥2॥
पौष वदी एकादशि को प्रभु, हुए आप संयमधारी।
निज आतम का ध्यान लगाए, होकर के प्रभु अविकारी॥
गुप्ति समिति व्रत धर्म के द्वारा, आश्रव कीन्हे बन्द की।
करूँ आरती....॥3॥
फाल्गुण वदि सातें को स्वामी, विशद ज्ञान को प्रगटाए।
कर्म घातियाँ नाश किए फिर, अनन्त चतुष्टय प्रभुपाए॥
दिव्य देशना आप सुनाए, ॐ कार मय छन्द की।
करूँ आरती....॥4॥
फाल्गुण शुक्ल सप्तमी को प्रभु, सारे कर्म विनाश किए।
छोड़ के यह संसार वास प्रभु, मोक्ष महल में वास किए॥
महिमा कौन कहे जिनवर के, "विशद" सुगुण आनन्द की।
करूँ आरती...॥5॥

क्षेत्रपाल जी की आरती

(तर्ज: हो जिनवर हम सब उतारे तेरी आरती....)

आज करें हम क्षेत्रपाल की, आरति मंगलकारी-2।
घृत के दीप जलाकर लाए-2, बाबा तेरे द्वार॥
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती...॥टेक॥
छियानवे क्षेत्रपाल की फैली, इस जग में प्रभुताई-2।
विजय वीर अपराजित भैरव-2, मणिभद्रादिक भाई॥
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती...॥1॥
लाल लंगोट गले में कंठी, लाल दुपट्टा धारी-2।
सिर पर मुकुट शोभता पावन-2, कर त्रिशूल मनहारी।
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती...॥2॥
कानों कुण्डल पैर पावटा, माथे तिलक लगाए-2।
बाजू बंद पान है मुख में-2, कूकर वाहन पाए॥
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती...॥3॥

अंगद आदि उपद्रव कीन्हें, तब लंकेश्वर ध्याए-2।
सर्व उपद्रव दूर किया तब-2, अतिशय शांती पाए॥
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती...।।4।।
सम्यक्त्वी तुम भक्त जनों के, सारे संकट हरते-2।
पुत्रादिक धन सम्पत्ती की-2, वांछा पूरी करते।।
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती...।।5।।
आज करें हम क्षेत्रपाल की, आरति मंगलकारी-2।
घृत के दीप जलाकर लाए-2, बाबा तेरे द्वार।।
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती...।।6।।

पद्मावती माता की आरती(तर्ज- भक्ति बेकरार है...)

माता का दरबार है, अतिशय मंगलकार है।
आज यहाँ पद्मावति माँ की, हो रही जय-जयकार है।।टेक॥
माँ पद्मावति पार्श्वनाथ को, मस्तक ऊपर धारे जी-2।
इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र खड़े हैं, माँ पद्मा के द्वारे जी-2॥ माता...॥1॥

जो भी माँ की शरण में आए, वह सौभाग्य जगाए जी-2।
पुत्र-पौत्र धन सम्पत्ति माँ के, दर पे आके पाए जी-2।।2।।
माता का दरबार है...
शाकिन-डाकिन भूत भवानी, की बाधा हट जाए जी-2।
वात-पित्त कफ रोगादिक से, प्राणी मुक्ती पाए जी-2।।3।।
माता का दरबार है...
त्रय नेत्री हे पद्मा देवी, तिलक भाल पे सोहे जी-2।
मुख की कान्ती अनुपम माँ की, भविजन का मन मोहे जी-2।।4।।
माता का दरबार है...
दैत्य कमठ का मान गलाया, सुयश विश्व में छाया जी-2।
आदि दिगम्बर धर्म बताकर, जिनमत को फैलाया जी-2।।5।।
माता का दरबार है...
कुक्कुट सर्प वाहिनी माँ के, सहस्र नाम बतलाए जी-2।
मथुरा में जिन दत्तराय जी, रक्षा तुमसे पाए जी-2।।6।।
माता का दरबार है...

दीप धूप फल पुष्प हार ले, आरति करने आए जी-2।
दर्शन करके विशद आपके, मनवांछित फल पाए जी-2॥7॥

माता का दरबार है...

भजन (बधाई गीत)

आज तो बधाई राजा महासेन दरबार जी,
महासेन दरबार, श्री चन्द्र कुँवर के द्वार जी-टेक
माता लक्ष्मणा बेटो जायो, श्री जिन चन्द्र कुमार जी
चन्द्रपुरी में जन्म लियो है, हुआ है मंगलाचार जी-आज॥1॥
घनन घनन घंटा बाजें, देव करें जयकार जी-
नगर नारियाँ चौक पुरावें, वाद्य बजें झंकार जी -आज॥2॥
इन्द्र शतक मिलकर के आयें, श्री जिन के दरबार जी
भक्ति भाव से वंदन करके, बोलें जय-जयकार जी-आज॥3॥
पाण्डुक शिला पर क्षीर नीर के, कलश शीश पे ढार जी
इन्द्र सहस्र नयनों से दर्शन, करता बारम्बार जी -आज॥4॥

इन्द्रानी हर्षित होकर के, करें 'विशद' श्रृंगार जी
ताण्डव नृत्य इन्द्र करता है, प्रभुवर के दरबार जी- आज॥5॥
चन्द्र प्रभु जी दीक्षा धारे, लख संसार असार जी
केवल ज्ञान जगाये पावन, किये कर्म सब क्षार जी-आज॥6॥
प्रगट हुए देहरा में भू से, अतिशय किए अपार जी
जन-जन की सब बाधा मिटती, चन्द्र प्रभु के द्वार जी -आज॥7॥

भजन

तर्ज- करम के खेल कैसे हैं...

बिना प्रभु चन्द्र को देखे, मेरा दिल बेकरारी है।
चौरासी लाख जाती में, बहुत सी देह धारी है॥1॥
मुसीबत ने मुझे घेरा, नहीं जग में गुजारी है।
प्रभु फरयाद सुनकर के, मुसीबत शीघ्र टारी है॥2॥
कर्म आठों ने घेरा है, नहीं जग में गुजारी है।

सुना है नाथ भक्तों की, विपद तुमने जो हारी है।।3।।
जगत के देव जो देखे, सभी वे सा विकारी है।
कोई क्रोधी कोई लोभी, किसी के संग नारी है।।4।।
प्रभु तुम हो तरण तारण, क्या मुद्रा निर्विकारी है।
विशद शांती मयी पावन, प्रभु जी कष्ट हारी है।।5।।
भरी झोली विशद उसकी, आरती जो उतारी है।
प्रभू के जो शरण आया, 'विशद' उसकी निवारी है।।6।।
चन्द्र प्रभु देव देवन के, ये ही विनती हमारी है।
दिया सबको प्रभू तुमने, आज अब मेरी बारी है।।7।।

'विहरमान विंशति तीर्थंकर वन्दना'

चौपाई

जम्बूद्वीप विदेह में जानो, पुण्डरीकणी नगरी मानो।
सीमंधर तीर्थेश कहाए, जिन चरणों हम शीश झुकाए।।1।।

विजयापुरि गज लक्षण धारी, युगमंधर पद ढोक हमारी।
पुरी सुसीमा बाहू स्वामी, मृग लक्षण धर हैं शिवगामी।।2।।
श्री सुबाहु कपि लक्षण पाए, अयोध्या के स्वामी कहलाए।
पूर्व धातकी खण्ड कहाए, अलकापुरि संजातक गाए।।3।।
तीर्थंकर रवि लक्षण धारी, जिनके चरणों ढोक हमारी।
विजयापुरी स्वयंप्रभ स्वामी, शशि लक्षण धारी शिवगामी।।4।।
ऋषभानन शशि लक्षण धारी, पुरी सुशीमा में अविकारी।
अनन्त वीर्य गज लक्षण पाए, पुरी अयोध्या में कहलाए।।5।।
अपर धातकी खण्ड कहाए, विजया नगरी पावन पाए।
श्री सूरिप्रभ जिनवर गाए, रवि लक्षण संयुक्त कहाए।।6।।
विशाल कीर्ति शशि लक्षण धारी, पुण्डरीकणी में अविकारी।
पुरी सुसीमा के अधिकारी, श्री वज्रधर संख सुधारी।।7।।
वृष लक्षण चन्द्रानन स्वामी, जिनके चरणों विशद नमामी।
पुष्करार्ध पूरव में जानो, चन्द्रबाहु पद्मांकित मानो।।8।।

पुरी विनीता में कहलाएँ, जिन पद में हम शीश झुकाएँ।
विजयापुरी भुजंगम स्वामी, चन्द्रांकित पद विशद नमामी।।9।।
रवि लक्षण धर ईश्वर स्वामी, पुरी सुसीमा पद प्रणमामी।
नेमि प्रभू वृष लक्षण धारी, पुरी अयोध्या में अविकारी।।10।।
पुष्करार्ध पश्चिम में भाई, पुण्डरीकणी नगरी गाई।
ऐरावत लक्षण के धारी, वीरसेन पद ढोक हमारी।।11।।
महाभद्र शशि लक्षण पाए, विजयापुरि में ढोक लगाए।
स्वस्तिक चिन्ह देवयश स्वामी, जिनके चरणों विशद नमामी।।12।।
पुरी अयोध्या के जो स्वामी, अजितवीर्य पद्मांकित नामी।
विहरमान तीर्थंकर ध्याएँ, एक सौ साठ पद शीश झुकाएँ।।13।।

मेरी विशद भावना

तर्ज–मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर.....

राग द्वेष कामादिक विजयी, जो सर्वज्ञ रहे।
मोक्ष मार्ग के उपदेशक प्रभु, जग में श्रेष्ठ कहे।।
बुद्ध वीर जिन हरिहर ब्रह्मा, जो भी नाम कहो।
भक्ती से प्रेरित होकर के, उनमें लीन रहो।।1।।
विषयों की आशा के, त्यागीसाम्य-भाव धारी।
निश दिन निज पर के, हित साधक हैं करुणाकारी।।
कठिन तपस्या स्वार्थ त्याग की, बिना खेद करते।
दुख समूह इस जग के सारे, ऋषि ज्ञानी हरते।।2।।
नित्य रहे सत्संग उन्ही का, उनका ध्यान रहे।
चित्त रहे अनुरक्त उन्ही सम, चर्या वान रहे।।

किसी जीव को नहीं सताऊँ, झूठ वचन त्यागूँ
पर धन वनिता पर ना लुभाऊँ, निज रस में लागूँ॥3॥
नहीं किसी पर क्रोध करू मैं, अहं भाव छोडूँ।
बढ़ती देख और की ईर्ष्या, भाव से मुख मोडूँ॥
सरल सत्य व्यवहार भावना, मेरी नित्य रहे।
पर उपकार करूँ जीवन में, कुछ भी कोई कहे॥4॥
मैत्री भाव सभी जीवों से, मेरा नित्य रहे।
दीन दुखी जीवों पर उर से, करुणा सोत्र बहे॥
क्रूर कुमार्गी जीवों पर भी, क्षोभ नहीं आए।
साम्य भाव उन पर भी धारूँ , परिणति हो जाए॥5॥
गुणीजनों को देख हृदय में, प्रेम भाव आए।
उनकी सेवा करके मन यह, मेरा सुख पाए॥
ना कृतघ्नता आवे मेरे, द्रोह नहीं पाऊँ।

दोष दृष्टि तज के गुण ग्राही, भाव हृदय लाऊँ॥6॥
लक्ष्मी आवे जावे या कोइ, अच्छा बुरा कहे।
मृत्यु आज ही आवे या मम, जीवन अग्र रहे॥
कोई कैसा भी भय मुझको, लालच दिखलावे।
न्याय मार्ग से तो भी मेरा, पद ना डिग पावे॥7॥
सुख में सुखी या दुख में मेरा, ना मन घबड़ावे।
गिरि श्मशान भयानक अटवी, सेना भय खावे॥
रहे अडोल अकंप निरन्तर, मन में दृढ़ता हो।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग में, सहनशीलता हो ॥8॥
जग के जीव सुखी हों कोई, कभी ना घबरावें ।
वैर पाप जग-मान छोड़ नित, नये मंगल गावें ॥
चर्चा रहे धर्म की घर-घर, दुष्कर दुष्कृत हो।
ज्ञानाचार उच्च हो अपना, जीवन सुकृत हो ॥9॥

जग में ईति भीति ना आवे, वृष्टि समय पर हो ।
न्याय प्रिय नृप धर्माचारी, वात्सल्य-धर हो ॥
रोग मरी दुर्भिक्ष ना होवे, प्रजा शांति मय हो ।
धर्म अहिंसामयी सर्व हित, पावन अक्षय हो ॥10॥
वायुयान वाहन दुर्घटना, वाष्प यान कोई।
वाष्प क्षरण ना हो विषाक्त का, ना भूकम्प होई ॥
भूत पिशाचादिक की बाधा, नहीं कोई आवे॥
कुमति अविद्या मनोव्याधि कोइ, प्राणी ना पावे ॥11॥
फैले प्रेम परस्पर जग में, मोह दूर होवे।
अप्रिय कटुक कठोर शब्द हर, मुख से ही खोवे॥
धर्म देश उन्नति कारी, जग का हर जीव रहे।
वस्तु स्वरूप विचार खुशी से, संकट 'विशद' सहे॥12॥

इति

कृति	:	**विशद श्री चन्द्रप्रभु देहरा तिजारा विधान (लघु)**
कृतिकार	:	प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर महाराज
संकलन	:	मुनि श्री विशालसागर जी, आर्यिका भक्ति भारती माताजी
सहयोगी	:	ऐलक विदक्षसागर जी, क्षुल्लक विसोमसागर जी, क्षुल्लिका वात्सल्य भारती
सम्पादन	:	ब्र. ज्योति दीदी, ब्र. आस्था दीदी, ब्र. सपना दीदी 9829127533
संस्करण	:	द्वितीय 2018 प्रतियाँ : 2000/- संयोजन : ब्र. आरती दीदी
प्राप्ति स्थल	:	ज्ञानसागर साहित्य केन्द्र-तिजारा श्री रमेश शास्त्री
मूल्य	:	21/- रु. मात्र
मुद्रक	:	पारस प्रकाशन, दिल्ली. मो: 9818394651, kavijain1982@gmail.com

-: अर्थ सौजन्य :-

श्री मल्लिनाथ जिनबिम्ब पंचकल्याणक महोत्सव

हिसार में भगवान के माता-पिता बनने के उपलक्ष्य में

श्री धर्मपाल जैन — श्रीमती उर्मिला जैन

अभिनव जैन, अभिषेक जैन, अरिहंत जैन

म. न. 202, गली नं. 5, जवाहर नगर, हिसार (हरि.)

मो.: 9896348961, 9896395280